केन्द्र सरकार द्वारा स्वीकृत कुल 40 लाख पदों में से करीब एक चौथाई पद रिक्त पड़े हैं

नई दिल्ली मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

कुछ समय पूर्व मोर्चा पाठकों ने पढ़ा था कि हरियाणा सरकार के करीब चार लाख स्वीकृत पदों में से आधे के करीब पद कई वर्षों से रिक्त पड़े हैं। विभागानुसार इनका विस्तृत विवरण भी प्रकाशित किया गया था। उससे भी बदतर स्थिति मोदी सरकार ने केन्द्रीय विभागों की बना रखी है। लोकसभा के चल रहे मौजूदा सत्र में एक प्रश्न के जवाब में सरकार द्वारा बताया गया है कि कुल स्वीकृत 40 लाख पदों में से 9 लाख 80 हजार पद खाली पड़े हैं। इसकी विभागानुसार स्थिति इस प्रकार है:

मंत्रालय/विभाग	स्वीकृत विभाग	खाली पद
रेलवे	15,14,007	2,93,943
रक्षा(सिविल)	6,46,042	2,64,706
गृह	10,85, 728	1,43,536
डाक	2,67, 491	90,050
राजस्व	1,78,609	80,243
ऑडिट	69,096	25,934
परमाणु ऊर्जा	38,153	9,460
साइंस-टेक	12,442	8,543
खनन	13,919	7,063
जल संसाधन	15,499	6,860
संस्कृति	10,583	3,788
पृथ्वी विज्ञान	7,484	3,043
शहरी मामले	19,455	2,751
कॉमर्स	5,091	2,585
पर्सनल-ट्रेनिंग	11,113	2,535
श्रम	6,488	2,408
विदेश	11,807	2,330
पर्यावरण-वन	4,882	2,302
कृषि	5,755	2,210
सांख्यिकी	6,155	2,156
अंतरिक्ष	18,156	2,106
सूचना प्रसारण	4,782	2,041
इलेक्ट्रॉनिक्स	6, 541	1,568
पीएमओ	446	129
राष्ट्रपति भवन	380	91
कैबिनेट सचि.	347	54

इन पदों के न भरे जाने से युवाओं को रोजगार से वंचित होने की बात को यदि एक ओर रख दिया जाय और केवल सम्बन्धित विभागों की कार्यकुशलता एवं आर्थिक हानि को देखा जाय तो काफ़ी गंभीर नतीजे देखने को मिलते हैं। सबसे अधिक रिक्तियां रेलवे में होने का क्या अर्थ है? जब लोको पायलेट यानी इंजन ड्राइवर कम होंगे तो कार्यरत ड्राइवरों पर काम का बोझ जरूरत से अधिक बढेगा या फ़िर ट्रेने रद्द करनी पड़ेगी। आज के दिन ये दोनों ही काम हो रहे हैं। इनके चलते एक ओर तो दुर्घटनायें बढ रही हैं तो दूसरी ओर ट्रेनें रद्द होने से कमाइ घट रही है। इसी प्रकार अन्य श्रेणियों में पड़ी रिक्तियों से भी रेलवे को भारी घाटा होने के साथ-साथ दुर्घटनाओं को भी झेलना पड़ रहा है। वेतन बचाने से जो लाभ हुआ उससे कई गुणा अधिक का नुक्शान हो चुका है।

इसी तरह डाक विभाग में 90 हजार से अधिक पद रिक्त होने का असर यह है कि आज के युग में, सैंकड़ों साल पुराने एवं व्यवस्थित डाक विभाग को प्राइवेट कुरियर सर्विस वालों ने पछाड़ दिया है। किसी जमाने में सरकार के इस विभाग की जो विश्वसनीयता होती थी आज वह लुप्त हो चुकी है। सरकार की नीतियों को देखते हुए लगता है कि उसने इस विभाग को बर्बाद करने की कसम खा रखी है।

लगभग यही स्थिति सरकार के हर विभाग की है। पदों को रिक्त रख कर सरकार जहां अपना वेतन खर्चा बचा कर खुश हो रही है वहां दूसरी ओर इसके चलते न केवल सरकार को भारी घाटा लग रहा है बल्कि टैक्स देने वाली जनता भी सेवाओं से वंचित है।

बंधवाड़ी से भी बड़ा कूड़े का पहाड़ बनाने को आतुर खट्टर, विरोध में डटे 'सेव अरावली' वालेंटियर, 'एनजीटी' बना तमाशबीन

फ़रीदाबाद (जितेन्द्र) नगर निगम द्वारा बंधवाड़ी कचराघर भर जाने के बाद पाली मोहब्ताबाद की अरावली में दो सौ एकड़ का नया कचराघर बनाने के विरोध में पर्यावरण संरक्षण के लिए काम कर रही संस्था सेव अरावली ट्रस्ट के सैकड़ों स्वयंसेवकों ने 10 दिसम्बर को फरीदाबाद और गुड़गांव में बीस जगह शांतिपूर्ण प्रदर्शन किए और यह प्रदर्शन तब तक जारी रखने का निर्णय लिया जब तक की सरकार अपना फैसला नही बदल देती। पर्यावरण प्रेमियों का कहना है कि नगर निगम फरीदाबाद और गुरुग्राम, भ्रष्टाचार के चलते सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट के सभी नियमों को ताक पर रखते हुए कचरे को छांटते ही नहीं है। और तो और, जान बूझ कर कचरे में नाले की मिट्टी मिला कर बंधवाड़ी पंहुचाते हैं ताकी ठेकेदार को ज्यादा पैसे मिल सके।

निगम अफसरों द्वारा जान बूझ कर कूड़े के पहाड़ बनाए जा रहे हैं। दुर्भाग्य है कि इन निगमों के अधिकारियों ने सरकार और कानून को भी गलत दस्तावेज और रिपोर्ट पेश की हैं जो कि दोनों शहरों को पर्यावरण के भयंकर खतरों की ओर ले जा रहे हैं।

प्रदर्शन कर रहे लोगों ने बताया कि अगर नगर निगम चाहे तो फरीदाबाद के खंदावली गाँव, दिल्ली की आई एन ए कॉलोनी, या गुरुग्राम की टाटा परिमंती सोसाइटी की तर्ज पर वार्ड स्तर पर कूड़े का निष्पादन करके 80 प्रतिशत तक कूड़ा वार्ड लेवल पर ही समाप्त कर सकती हैं।

बचे हुए 20 प्रतिशत कूड़े से भी वेस्ट टू एनर्जी प्लांट या अन्य माध्यमों से निपटा जा सकता हैं। सरकार या नगर निगम के पास स्रोत कम नही हैं बल्कि सही नियत की कमी हैं। जिस शिद्दत से नगर निगम भ्रष्टाचार करती है , वही शिद्दत यदि कूड़े के निष्पादन और निपटारण में लगाती तो आज बंधवाड़ी जैसे कूड़े के पहाड़ ना बनते और ना अनगिनत जीवन इस जहर के प्रभाव से त्राहिमाम कर रहे होते।

सरकार और नगर निगम यदि चाहे तो सेव अरावली उन्हें पूरे तरीके से सहयोग करते हुए कूड़े निष्पादन के तरीके बताने और पूरा सहयोग करने को तैयार हैं। जिससे सरकार और नगर निगम की न सिर्फ अतिरिक्त आय होगी बल्कि कई लाखों करोड़ों लोग कूड़े से निकलने वाले ज़हर से मरने से बच जाएँगे।

समझने वाली बात यह है कि न तो सरकार को और न ही निगम अधिकारियों को कूड़े के निष्पादन की कोई चिंता है। इन्हें अपनी जेबें भरने के लिये लम्बे समय तक इन्तजार करने की आदत भी नहीं है। इसलिये इन्होंने अपनी लूट कमाइ के लिये इको ग्रीन जैसी चोर कम्पनी को यह धंधा सौंप रखा है।

कूड़ा निष्पादन के जो सुझाव एवं तौर-तरीके 'सेव अरावली' उन्हें समझाना चाहता है, वे सब इनके लिये बेकार हैं, ये लोग तो तुरन्त वसूली के सिद्धांत में विश्वास रखते हैं और उसी का ये पालन भी कर रहे हैं। जहां तक सवाल है 'एनजीटी' का यह तो एक तरह की सरकारी दूकान से बढ़ कर कुछ नहीं है। न ये प्रदूषन रोकना चाहता न इसके बसका कुछ है। यह केवल जुर्माने लगा सकता है। जुर्मानों की रकम सरकारी खजानों में इधर से उधर घूमती रहती है और प्रदूषण दिन दूना -रात चौगुणा बढ़ता रहता है।

यह मसला केवल 'सेव अरावली' का ही नही है बल्कि पूरे शहर एवं देश का है। इसलिये इससे निपटने के लिये सभी नागरिकों को खुल कर संघर्ष में उतर कर प्रदूषण को बढावा देने वाली सरकार के विरुद्ध लड़ना होगा।

प्रशासनिक लापरवाही का शिकार, उजड़ रहा इकलौता टाउन पार्क

फ़रीदाबाद (म.मो.) स्मार्ट सिटी सेक्टर 12 फरीदाबाद के इकलौते टाऊन पार्क में गंदगी, रैनीवाल के ओवरफलो पानी से बने मछली तालाब, अव्यवस्था, मरे हुए जानवरो के कारण वातावरण में चारों ओर फैली भयायक बदबू, सूखे हुए दीमक खा चुके खतरनाक स्थिति में खड़े वृक्ष आदि के कारण यह इकलौता पार्क धीरे-धीरे सभ्य लोगों से महरूम होता जा रहा है।

यह लोग इस पार्क की ओर आना या घूमना अब पसंद नहीं करते हैं। जिसे आवारा और असमाजिक लोगों के लिए यह सुरक्षित क्षेत्र के रुप में विकसित होता जा रहा है। इस विषय में यहां आने वाले कई वरिष्ठ नागरिकों और महिलाओं ने विधायक नरेंद्र गुप्ता और एचएसवीपी के संबंधित अधिकारियों से निवेदन किया था। लेकिन केवल सांकेतिक और आंशिक सुधार का नाटक भर किया गया। स्थाई समाधान की ओर ना तो किसी का ध्यान है ना किसी की कोई सुनने वाला, ना ही कोई जिम्मेवारी समझने वाला ना कोई इनके ऊपर पूछने वाला अब इस विभाग पर तो यह कहावत बिल्कुल सत्य साबित हो रही है कि, जब संईया भये कोतवाल तो फिर डर काहे का